B.A. - II Part Hons क्रमशः डॉ० उपेन्द्र कुमार
Hindi 27/1/22 हिंदी र०प्र०व०म० कॉ०, महनार

अविचल रहा और बार - बार मेरी पुकार्ता रहा - अजीत होगा मेरा अन्त।"

निराला जी की सर्वश्रेष्ठ प्रबंधात्मक रचनाएं 'राम की शक्ति पूजा' और 'तुलसी दास' हैं। एक ओर उनमें आवेग तत्व की प्रधानता है तो दुसरी ओर वस्तु संगम में कसाव भी है। राम की शक्ति पूजा तो अपने लघु आकार के बावजूद महाकाव्य की उदात्तता और गरिमा अपने आप में समेटे हुए है। 'तुलसीदास' में देश की सांस्कृतिक सूर्य के अस्त हो जाने से लेकर भारतीय क्षितिज पर तुलसी की अभ्युदय तक की परिस्थितियों का बड़ा ही घात - प्रतिघात पूर्ण और मनोवैज्ञानिक चित्र उभरा है। तुलसीदास में युग की व्यंजना के साथ प्रकृति और पुरुष के चिंतन संबंध की झांकी प्रस्तुत की गयी है। यह भी ध्यातव्य है कि मध्ययुगीन कवियों ने प्रकृति और नारी को माया माना था किन्तु निराला के तुलसीदास उन्हीं दोनों से प्रेरणा प्राप्त कर जीवन संग्राम में विजयी होते हैं। वस्तुतः 'राम की शक्तिपूजा' और 'तुलसीदास', 'कामायनी' और 'उर्वसी' के साथ आधुनिक हिन्दी कविता की अधतन उपलब्धियां हैं।

तुलसीदास के बाद निराला के काव्य की दिशा बिल्कुल बदल सी गयी है। सन् 1941 ई० में 'कुकुरमुत्ता' लिखकर निराला ने हिन्दी काव्य जगत को एक बहुत बड़ा झटका दिया जितना बड़ा उन्होंने 1922 ई० में 'जूही की कली' लिखकर दिया था। 'कुकुरमुत्ता' अभिजात और शिष्ट के विरुद्ध सामान्य और अनगढ़ के प्रतिष्ठा का उद्घोष बनकर आया। राजनीतिक शब्दावली का सहारा लिया जाय तो 'जूही की कली' में सामन्ती बंधनों में जकड़े मध्यवर्गीय की मुक्ति कामना और नैसर्गिक प्रेम भावना व्यक्त हुई थी। कुकुरमुत्ता शोषक श्रेणी के विरुद्ध शोषितों की दर्द स्फीत ललकार का प्रतीक है। निराला - कुकुरमुत्ता में गुलाब के बहाने ऊँची पतियों को चुनौती देकर